महाविद्यालयीन ग्रंथालयों में उपलब्ध पाठ्य सामग्री (टीचिंग मटेरियल) के प्रति पाठकों का दृष्टिकोण

कृष्णा लढ़ा*

***लाइब्रेरियन, श्री क्लॉथ मार्केट कन्या वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर**

संक्षेपिका

उच्च शिक्षा वर्तमान समय में एक चुनौती पूर्ण कार्य है। उच्च शिक्षण संस्थानों में विधार्थियों को सामान्य शिक्षा के बजाय ऐसा शिक्षा उपलब्ध कराये जो उनके जीवन में लम्बे समय तक उपयोगी हो। इस हेतु प्रयोग की जाने वाली पाठ्य साम्रगी एवं उसके उपयोग का तरीका महत्वपूर्ण होता है। इसमें ग्रंथालय की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रंथालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री का संग्रह, पाठकों द्वारा इसका उपयोग, ई–लायब्रेरी व इन्टरनेट की सुविधा व उपलब्ध साधनों के प्रति पाठकों की संतुष्टता एवं उन्हें और अधिक उपयोगी बनाने हेतु सुझाव जानने के लिये इन्दौर के वाणिज्य महाविद्यालयों के प्राध्यापक एवं विधार्थियों से प्रश्नावली के माध्यम से आकड़े एकत्रित किये गये। साक्षात्कार द्वारा जानकारी ली गई तथा उसका विश्लेषण किया गया।

कुंजीशब्दः महाविद्यालय ग्रंथालय, पाठ्य साम्रगी, पाठक

प्रस्तावनाः

शिक्षा जीवन की वह विशिष्ट प्रकिया है जो निरन्तर इसे नये नाम एवं रूप प्रदान करती है। शिक्षा व्यक्ति को उसके चहुओर के वातावरण को समझने तथा उसमें उसकी स्थिति की अनुभूति प्रदान करती है। शिक्षा मुख्य रूप से शिक्षण, प्रशिक्षण, अधिगमन, अन्वेषण, संवाद ज्ञान का स्वरूप, अनुभव तर्क, विश्वास जैसी बुनियादी अवधारणाओं को समझने की कोशिश करती है।

शिक्षण शब्द का शाब्दिक अर्थ है सिखाना। शिक्षण शिक्षक द्वारा सम्पादित की जाने वाली क्रिया है। यह भी कहा जा सकता है कि अध्यापक अपने छात्रों को जो पढ़ाना सिखाना चाहते है, उसके लिये जिस प्रक्रिया को अपनाते है वह शिक्षण है। इस प्रकार शिक्षण अध्यापक और छात्रों के बीच चलने वाली सोदेश्य प्रक्रिया है। शिक्षण एक ओर ज्ञान के स्वरूप पर तो दूसरी ओर शिक्षा के स्वरूप के उदेश्यों पर निर्भर है।

शैक्षणिक क्षेत्र में सीखना एक अनवरत सहज या प्रयास पूर्वक की गई प्रक्रिया है। सहज रूप में यह निरन्तर चलने वाली तथा जाने अनजाने चलने वाली क्रिया है जिससे विधार्थी अनौपचीरक रूप से नए–नए अनुभवों को लगातार प्राप्त करता रहता है। ऐसा व्यक्ति की आवश्यकताओं तथा उसके जिज्ञासु व्यवहार के कारण होता है।

सीखने एवं सिखाने में पाठ्य साम्रगी का अहम स्थान होता है। शिक्षा की समूची प्रक्रिया अपने व्यवहारिक रूप में इसी पर केंद्रित है। ग्रंथालय किसी भी संस्था का मुख्य भाग है जो ज्ञान प्राप्त करने वाले पाठकों के लिये पुल का काम करता है। ग्रंथालय में पुस्तकों एवं जानकारी का होना आवश्यक ही नहीं अपितु सही पाठक को सही ज्ञान सही समय पर मिलना आवश्यक है। वर्तमान समय में सूचना एवं पाठ्य सामग्री एकत्र करना और पाठकों तक पहुचाना आदि साधनों में परिवर्तन आया है। पाठकों की पढ़ने की आदत भी बदली हैं वे तुरन्त सूचना चाहते है। ग्रंथालय इस बदलाव को नजरअंदाज नहीं कर सकते है परिवर्तन आवश्यक है। पाठकों को ग्रंथालय के उपयोग के लिये प्रेरित करने हेतु आधुनिक तकनीकी लाना आवश्यक है। कुछ वर्ष पूर्व जब ई–बुक्स व डिजिटल लायब्रेरी आई तो ऐसा

लगा कि मुद्रित पुस्तें अधिक समय तक नहीं चल पाएगी परंतु ग्रंथालय ने नई तकनीकी अपना कर दोनों प्रकार की सेवा पाठकों को सफलता पूर्वक दे रहे है।

उददेश्यः यह जानना कि ग्रंथालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री पाठकों की आवश्यकतानुसार पर्याप्त हैं, पाठकों द्वारा ग्रंथालय का उपयोग का स्तर क्या है, पाठ्य सामग्री से पाठक संतुष्ट है एवं ग्रंथालय के विकास हेतु पाठकों के सुझाव आदि रिर्सच पेपर का उदेश्य है।

साहित्य पुनरावलोकनः

महाविद्यालय ग्रंथालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री, उनके उपयोग एवं संतुष्टि से संबंधित अनेक अध्ययन पूर्व में किये गए उसमें कुछ इस प्रकार है–

Awolola (1998) – इस सर्वेक्षण द्वारा नाइजेरिया के दो महाविद्यालय की प्रभावपूर्ण स्थिति "college of education libraries in kwara state (Nigeria) : a comparative study" का अध्ययन किया गया। इसमें लेखक ने ग्रंथालय में बैठने का स्थान, संग्रह एवं सेवा आदि समस्याओं पर विचार विमर्श किया। इसमें पाया कि ग्रंथालय अपना कार्य करने में सफल नही हो पाया। इसका मुख्य कारण अर्पाप्त बजट था। लेखक ने सुझाव दिया कि शैक्षणिक ग्रंथालयों के लिए आवश्यक नियमावली होना चाहिये।

Virendra kumar (2013) – हरियाणा की एक तकनीकी संस्था का ग्रंथालय सेवा के प्रति उपयोगकर्ता की संतुष्टि शीर्षक An empirical study of user satisfection towards library service in technical institute of Haryana का अध्ययन विभिन्न बिंदुओं के आधार पर जैसे– ग्रंथालय का संचालन, व्यवस्थापन, ई–रिसोर्स सेवा, संदर्भ सेवा, आदान प्रदान सेवा, प्रलेखन सेवा, रिप्रोग्राफी सेवा एवं इन्टरनेट आदि बिंदुओं पर अध्ययन किया गया। इसमें पाया कि उपयोगकर्ता सुविधा एवं सेवा से संतुष्ट नहीं थे तथा पाठकों का कहना था कि पुस्तकें अधिक समय के लिये निर्गमित होना चाहिये।

Panwar and vyas (1976) –इसके अर्न्तगत दो कन्या महाविद्यालय का जो दिल्ली विश्वविद्यालय से संबंधता प्राप्त थे का अध्ययन किया गया। जिसका शीर्षक "user's survey of the women college libraries" आकड़ों का संग्रह सामाजिक विज्ञान के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विधार्थियों तथा शिक्षकों द्वारा प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। सर्वेक्षण में पाया कि पूर्व स्थापित महाविद्यालय की अपेक्षा बाद में स्थापित महाविद्यालय द्वारा पुस्तकें अधिक क्रय की गई क्योकि पुस्तकों के लिये अधिक बजट था। ग्रंथालय सेवा एवं भौतिक सुविधाऍ संतुष्टिपूर्ण थी।

Lohar & kumar (2007) – प्राध्यापकों द्वारा ग्रंथालय का उपयोग कितना किया जाता है का परीक्षण किया गया जिसका शीर्षक "Teacher attitude towards library facilities & information resource in first grade college in shimoga district: A survey जिसमें पाया कि 52 प्रतिशत पाठक एक घंटे से कम समय प्रतिदिन ग्रंथालय में व्यतीत करते है, शेष पाठक प्रति सप्ताह आधे घंटे से थोड़ा अधिक समय व्यतीत करते है।

Mulla and Chandra shekhar (2006) - एक अध्ययन द्वारा जिसका शीर्षक "E-resource and service in engineering college libraries – A case study" किया गया। इसमें कर्नाटका में इंजीनियरिंग महाविद्यालय

के ग्रंथालय में उपलब्ध इलेक्ट्रानिक साधनों का परीक्षण किया गया। जिसमें पाया कि डिजिटल ग्रंथालय में जो सेवा उपलब्ध होना चाहिये वह नहीं थी। इसका मुख्य कारण प्रशिक्षित आई टी कर्मचारी नहीं थे। बजट की भी कमी थी।

प्रविधिः

प्रत्येक अनुसंधान किसी प्रश्न या समस्या को लेकर किया जाता है। अध्ययन के लिये प्रश्नावली एवं साक्षात्कार द्वारा जानकारी प्राप्त की गई। प्रस्तुत शोध पेपर में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से संबंधता प्राप्त 20 वाणिजय महाविद्यालय को शामिल किया गया। प्रत्येक महाविद्यालय से 20 पाठकों से अर्थात 400 प्रश्नावली भरवायी गई। पाठ्य सामग्री का उपयोग, उपलब्ध पाठ्य सामग्री एवं सेवा के प्रति पाठकों की संतुष्टता एवं उनके सुझाव आदि के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई तथा प्राप्त आकड़ों के आधार पर विश्लेषण किया गया। ग्रंथालय संबंधी जानकारी भी लाइब्रेरियन से प्राप्त की गई।

विश्लेषणात्मक अध्ययनः पाठकों द्वारा प्रश्नावली से प्राप्त आंकडों का विश्लेषण साधारण प्रतिशत के माध्यम से किया गया –

ग्रंथालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्री –

पाठ्यपुस्तकें	ग्रंथालय संख्या	3(15%)	4(20%)	4(20%)	5 (25%)	4 20%
	पुस्तक संख्या	4000-8000	8000-12000	12000-16000	16000-20000	20000 से अधिक
जर्नलस	ग्रंथालय संख्या	6(30%)	8(40%)	4(20%)	2 (10%)	
	जर्नलस संख्या	10	10-20	20-30	30 से अधिक	
इंटरनेट व ई–लायब्रेरी	ग्रंथालय संख्या	6(30%)	4(20%)	5(25%)	5(25%)	
	लायब्रेरी सुविधा	इनफ्लिबनेट	डेलनेट	अन्य	नहीं	

उपरोक्त तालिका में 3(15%) ग्रंथालय में पुस्तकों की संख्या 4000 से 8000 4(20%) में 8000 से 12000 इसी प्रकार दूसरे 4(20%) में ग्रंथालय पुस्तकों की संख्या 12000 से 16000 व 5(25%) में 16000 से 20000 तथा अन्य 4(20%) ग्रंथालयों में 20000 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध है । जर्नलस के संबंध में पाया गया कि 6(30%) ग्रंथालय में 1–10 जर्नलस, 8(40%) में 10–20 व 4(20%) में 20–30 तथा 2 (10%)में 30 से अधिक जर्नलस उपलब्ध है । इन्टरनेट व ई–लायब्रेरी सुविधा 6(30%) ग्रंथालयों में इनफ्लिबनेट, 4(20%) ग्रंथालयों में डेलनेट सुविधा, 5(25%) ग्रंथालयों में कम्प्यूटर लेब के माध्यम से इंटरनेट सुविधा, 5(25%) ग्रंथालय ऐसे थे, जहां इस प्रकार की कोई सुविधा नहीं थी ।

पाठकों द्वारा ग्रंथालय उपयोग –

क्रमांक	पाठकों की संख्या प्रतिदिन	ग्रंथालय की संख्या	प्रतिशत
1	1–25	0	0
2	25–50	5	25
3	50–75	7	35

4	75 से अधिक	8	40
	कुल	20	100

तालिक क्रमांक 5.2 में पाठकों द्वारा ग्रंथालय के उपयोग को दर्शाया गया कि प्रतिदिन कितने पाठक आते हैं। 5(25%) ग्रंथालयों में 25–50 पाठक, 7(35%) ग्रंथालयों में 50–75 पाठक तथा 8(40%) ग्रंथालयों में 75 से अधिक पाठक प्रतिदिन पुस्तकें निर्गमित करवाने या ग्रंथालय में बैठकर अध्ययन करने हेतु आते हैं।

पाठ्य सामग्री से संतुष्टता–

वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
हां	255	63.75
नहीं	83	20.75
नहीं मालूम	62	15.5
कुल	**400**	**100**

ग्रंथालय में उपलब्ध पाठ्यसामग्री तथा सेवा आदि से पाठक संतुष्ट है अथवा नहीं के संबंधित प्राप्त आंकडों द्वारा ज्ञात हुआ कि 255 (63.75%) पाठक वहां उपलब्ध पाठ्यसामग्री एवं सेवा से संतुष्ट है तथा 83(20.75%) पाठक असंतुष्ट पाए गए । वहीं 62 (15.5%) पाठक ने इस संबंध में कोई उत्तर नहीं दिया ।

पाठ्य सामग्री में वृद्धि–

वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
पाठ्यपुस्तकें	210	52.5
जर्नलस	49	12.25
इंटरनेट सुविधा	83	20.75
उपरोक्त सभी	58	14.5
कुल	**400**	**100**

उपरोक्त तालिका में पाठ्य सामग्री में वृद्धि के संबंध में आंकलन किया गया । 210(52.5%) पाठक चाहते हैं कि पाठ्य पुस्तकों में ओर वृद्धि होना चाहिए । वहीं 49(12.25%) पाठक जर्नलस की संख्या में वृद्धि चाहते हैं, इंटरनेट सुविधा ओर बढ़ाने हेतु 83(20.75%) पाठकों का मत है, जबकि 58(14.5%) पाठक सभी क्षेत्र में वृद्धि चाहते हैं ।

परिणामः

प्राप्त आकड़ों के विश्लेषण एवं प्राध्यापकों विधार्थियों एवं लाइब्रेरियन से साक्षात्कार के आधार पर पाया गया कि अधिकांश ग्रंथालयों में पाठ्य सामग्री पर्याप्त है। किन्तु कुछ ग्रंथालयों में इसमें वृद्धि की आवश्यकता है। ग्रंथालय में इन्टरनेट व ई–लायब्रेरी की सुविधा भी कम थी। प्रतिदिन ग्रंथालय में आने वाले पाठकों की संख्या बहुत कम है। यद्यपि उपलब्ध पाठ्य सामग्री से कुछ पाठक संतुष्ट थे परन्तु अन्य पाठक सभी क्षेत्रों में वद्धि चाहते हैं।

निष्कर्ष एवं सुझावः

इस प्रकार ग्रंथालयों को जीवित रखना है तो समय के अनुसार परिवर्तन आवश्यक हैं। ग्रंथालय पाठकों से है। इसीलिए आवश्यक है कि पाठकों की आवश्यकता, उनकी पढ़ने की आदत को समझना और उनके अनुसार ग्रंथालयों

का विकास करना आवश्यक हैं तभी ग्रंथालय सफलता पूर्वक कार्य कर सकते है केवल वर्तमान में ही नहीं अपितु भविष्य में भी। टीचिंग एवं लर्निग के लिये आधुनिक तकनीकी महत्वपूर्ण साधन है अन्यथा उनकी सार्थकता समाप्त हो जाएगी। शैक्षणिक ग्रंथालयों में पाठ्य सामग्री ऐसी हो जो कोर्स, रिर्सच प्रोजेक्ट एवं शैक्षणिक गतिविधियों के विशेषज्ञ जैसे–शिक्षक, रिर्सच विधार्थी, प्रशासक संतुष्ट हो। इसीलिये आई़ सी़ टी़ बेस सेवा देना उपयोगी है। नॉलेज पोर्टल ''द नेशनल नॉलेज कमीशन '' ने सुझाव दिया कि ग्रंथालयों का विकास होना चाहिये। सभी महाविद्यालय एवं ग्रंथालय कम्प्यूटराइज्ड एवं इन्टरनेट सुविधा से युक्त होना चाहिये। यदि ये सब साधन उपलब्ध होगें तो शिक्षक अपने विधार्थियों को अच्छी शिक्षा दे सकते है।

सन्दर्भ सूचीः

1़ चॉद किरण, 1996 : शिक्षा दर्शन और समाज, ज्ञानदेव त्रिपाठी, दिल्ली़

2़ धमेन्द्र कुमार, 2014 : भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास, आऱ लाल़ बुक डीपो, मेरठ

3़ अग्रवाल श्याम सुन्दर, 1996 : ग्रंथालय प्रबन्ध के मूल तत्व, राज पब्लिशिग़ हाउस प्रकाशन, जयपुर

4़ यूनिवर्सिटी न्यूज, 53 ऩ 8 मार्च 2015

5़ यूनिवर्सिटी न्यूज, 53 ऩ 22 जून, 2015

6़ सिंह सोनल, 2015 : कॉन्ट्रीवेन्स ऑफ एकेडेमिक लायब्रेरीज इन डिजिटल एरा, इन्टेलेक्चुअल सोसाइटी फॉर सोकिया–टेक्नो वेलफेयर, गजियाबाद